**भोम चौथी नूर में, नट निरत नूर खेलत।**
**नूर बिना कछू न पाइए, सुख सनमुख नूर अतन्त।। १३० ।।**

पांचवीं भोम से उतरकर चौथी भोम में आइए जो नूर की है। यहां पर श्री राजजी के सामने निरत का खेल होता है जो नूर का है।

**तीसरी भोम जो नूर की, जित है नूर पड़साल।**
**हक हादी रूहें नूर बैठक, आवें दीदारें नूर-जलाल।। १३१ ।।**

चौथी भोम से उतरकर आइए जहां नूर की पड़साल है। यहां पर श्री राजश्यामाजी और रूहें नूर की बैठक में बैठते हैं। तब अक्षर ब्रह्म दर्शन को आते हैं।

**दूसरी भोम का नूर जो, चेहेबच्चा नूर झीलन।**
**हक हादी सुख नूर भुलवनी, देत नूर सुख अपने तन।। १३२ ।।**

तीसरी भोम से उतरकर दूसरी नूर की भोम में आइए। यहां झीलने का नूरी चेहेबच्चा है तथा श्री राजश्यामाजी अपने ही तन सखियों को नूर की भुलवनी का सुख देते हैं।

**नूर द्वार सुख पेहेली भोमें, सुख अव्वल भोम नूर पूर।**
**फिरता सुख सब नूर में, मध्य नूर नूर नूर।। १३३ ।।**

दूसरी भोम से उतरकर पहली नूरी भोम में नूर के दरवाजे पर आइए। यहां के सुख नूर से भरपूर हैं। चारों तरफ घेरकर नूर ही नूर का सुख है। मध्य में भी नूर ही नूर भरा है।

**इत नूर खिलवत हक की, रूहें नूर मोमिनों न्यामत।**
**नूर मेला मूल मोमिनों, बीच हक का नूर तखत।। १३४ ।।**

इसी प्रथम भोम में श्री राजजी महाराज की खिलवत (मूल-मिलावा) नूर का है, जहां पर रूहों का मेला श्री राजजी महाराज के सिंहासन के सामने बैठा है। हवेली के बीच चबूतरे पर श्री राजजी महाराज का नूरी सिंहासन शोभा देता है।

**हक हादी रूहें नूर ठौर, हक जात नूर वाहेदत।**
**कहे महामत नूर बिलन्द में, ए अपनी नूर कयामत।। १३५ ।।**

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह अपना परमधाम, श्री राजश्यामाजी और रूहें तथा सब ठिकाने श्री राजजी महाराज के नूर के हैं। यही हमारी नूर की कयामत है, अर्थात् अखण्ड स्थान है।

**नूर की परिकरमा तमाम** ।। प्रकरण ।। ३७ ।। चौपाई ।। २१७९ ।।

## धाम बरनन

**बरनन धाम को, कहूं साथ सुनो चित्त दे।**
**कई हुए ब्रह्माड कई होएसी, कोई कहे न हम बिन ए।। १ ।।**

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! मैं धाम का वर्णन करती हूं। तुम चित्त देकर सुनो। कई ब्रह्माण्ड हो गए, कई होंगे, परन्तु हमारे बिना कोई नहीं कहेगा।

Nijanand App

**क्यों कहूं धाम अन्दर की, विस्तार बड़ो अतन्त।**
**क्यों कहे जुबां झूठी देह की, अखण्ड पार के पार जो सत।। २ ।।**

रंग महल के अन्दर का विस्तार बहुत भारी है जो बेहद के पार अक्षर, अक्षर पार अक्षरातीत धाम के अन्दर की हकीकत है। मेरी जबान और तन झूठे संसार का है।

**तो भी नेक केहेना साथ कारने, माफक जुबां इन बुध।**
**अद्वैत अखण्ड पार की, करूं साथ के हिरदे सुध।। ३ ।।**

इस संसार की जबान और बुद्धि के प्रमाण से सुन्दरसाथ के वास्ते थोड़ा कहना पड़ रहा है। बेहद भूमि के पार की सुध सुन्दरसाथ को दे रही हूं।

**थंभ दिवालें गलियां, कई सीढ़ियां पड़साल।**
**मन्दिर कमाड़ी द्वार ने, माहें कई नंग रंग रसाल।। ४ ।।**

थंभे, दीवारें, गलियां, सीढ़ियां, पड़साल, मन्दिर, किवाड़, दरवाजों के कई रंग के नग शोभा देते हैं।

**गली माहें कई गलियां, कई चौक चबूतरे अनेक।**
**खिड़की माहें कई खिड़कियां, जित देखूं जानों सोई विसेक।। ५ ।।**

गली के अन्दर गली, चौक, चबूतरा, खिड़कियां जो भी देखती हूं एक से एक सुन्दर लगती हैं।

**दूजी भोम का चेहेबच्चा, जल पर झरोखे तिन।**
**सोभा लेत अति सुन्दर, तीनों तरफों बन।। ६ ।।**

दूसरी भोम का चेहेबच्चा (खड़ोकली) जिसके जल पर आए झरोखे तथा तीन तरफ के ताड़वन के पेड़ सुन्दर शोभा लेते हैं।

**तीनों तरफ बन डारियां, करत छाया जल पर।**
**एक तरफ के झरोखे, जल छाए लिया अन्दर।। ७ ।।**

ताड़वन की तीन तरफ की डालें खड़ोकली के जल पर छाया करती हैं और चौथी तरफ रंग महल के झरोखे हैं।

**तीनों तरफों कठेड़ा, नेक नेक पड़साल।**
**चारों तरफ उतरती सीढ़ियां, पानी बीच विसाल।। ८ ।।**

खड़ोकली के तीन तरफ कठेड़ा है। उनसे लगती छोटी सी पड़साल है। पानी के अन्दर सीढ़ियां उतरी हैं।

**आगूं मन्दिर चबूतरा, थंभ सोभित तरफ चार।**
**इत आवत रूहें नहाए के, बैठ करत सिनगार।। ९ ।।**

आगे भुलवनी में सौ मन्दिर का चबूतरा है और चारों तरफ थंभों की शोभा है। रूहें यहां पर नहाने के बाद सिनगार करती हैं।

**इत दाहिनी तरफ जो मन्दिर, गिनती बारे हजार।**
**इन मन्दिरों खेलें भुलवनी, हर मन्दिर द्वार चार।। १० ।।**

खड़ोकली के दाहिनी तरफ भुलवनी के बारह हजार मन्दिर हैं और हर मन्दिर में चार दरवाजे हैं। यहां भुलवनी का खेल होता है।

Nijanand App

**कर सिनगार इत खेलत, ए जो मन्दिर हैं भुलवन।**
**दौड़ें खेलें हंसें रूहें, देख अपनी आभा रोसन।। ११ ।।**

सिनगार करके भुलवनी के मन्दिरों में खेलते हैं। जहां दौड़कर हंसते हुए अपने ही प्रतिबिम्ब को देखकर खेलते हैं।

**कई फिरते चबूतरे, फिरते मन्दिर गिरदवाए।**
**थंभ तिन आगूं फिरते, बीच फिरता चौक सोभाए।। १२ ।।**

इसको घेरकर कई चबूतरे, मन्दिर, थंभे और चौक शोभा देते हैं।

**कई चौखूंने चबूतरे, चारों तरफों मंदिर।**
**थंभ फिरते चारों तरफों, ए सोभा अति सुन्दर।। १३ ।।**

उनके आगे कई चौरस चबूतरे जिनके चारों तरफ मन्दिर हैं, चारों तरफ थंभ घूमते हैं, उनकी सुन्दर शोभा है।

**कई चौखूंने चबूतरे, मन्दिर आठों हार।**
**चली चार गलियां चौक थें, हार आठ थंभ गली बार।। १४ ।।**

पांचवीं भोम में कई चौरस चबूतरे बने हैं। जहां आठ हवेलियों की आठ हारें हैं। चार-चार गलियां एक-एक चौक से निकलती हैं। हर आठ थंभों के बीच बारह गलियां बनती हैं।

**कही एक ठौर के चौक की, जित बैठत धनी आए।**
**चौक चबूतरे इन भोम के, कई जुगत क्यों कही जाए।। १५ ।।**

यह एक ठिकाने के चौक की हकीकत बताई है जहां श्री राजजी महाराज आकर बैठते हैं। इस भोम के चौक और चबूतरों की युक्ति वर्णन करने में नहीं आती।

**ऊपर थंभ झलकत, और तले भोम झलकार।**
**सामग्री सब झलकत, और थंभ दिवालों द्वार।। १६ ।।**

थंभों के ऊपर की शोभा झलकती है। थंभों के नीचे की भोम की शोभा भी झलकती है। यहां की सब सामग्री, थंभ, दीवारें और दरवाजे झलकते हैं।

**क्यों कहूं हिसाब मन्दिरन को, दिवालां चौक थंभ कई लाख।**
**अमोल अतोल अन गिनती, कछू कह्यो न जाए मुख भाख।। १७ ।।**

मन्दिरों का हिसाब कैसे बताऊं? जहां लाखों दीवारें, चौखठ, थंभे हैं, ऐसे अनगिनत की शोभा मुख से कही नहीं जाती।

**ए सुख इन मन्दिरन में, वाही सरूपों सुध।**
**विध विध विलास इन धाम को, कहा कहे जुबां इन बुध।। १८ ।।**

इन मन्दिरों के सुख की खबर वहीं की रूहों को है। इस धाम के तरह-तरह के विलास के सुख यहां की जबान और बुद्धि से कैसे करें?

Nijanand App

**जो वस्त जिन मिसल की, सोई बनी ठौर तित।**
**सेज्या संदूक सिंघासन, कहूं केती कई जुगत।। १९ ।।**

जो वस्तु जिस तरह की जहां चाहिए वह वैसी ही वहां बनी है। सेज्या, सन्दूक, सिंहासन कहां तक कहूं, कई तरह की शोभा बनी है।

**कई जुगतें कई जिनसें, कई सामग्री सनंध।**
**क्यों करूं बरनन धाम को, ए झूठी देह मत मंद।। २० ।।**

धाम में कई तरह की सामग्री की कई जिनसें हैं। इनका संसार की झूठी देह और मंद बुद्धि से कैसे वर्णन करें?

**कई बेली एक दिवाल में, कई बेल फूल तिन पात।**
**तिन पात पात कई नंग हैं, एक नंग रंग कह्यो न जात।। २१ ।।**

दीवार में कई बेलें हैं, बेलों में फूल और पत्ते हैं। पत्ते-पत्ते में कई नग हैं। एक-एक नग में कई रंग हैं जो कहे नहीं जाते।

**पात पात को देख के, हंसत बेलि संग बेलि।**
**सैंन करे पंखी पंखी सों, जानों दौड़ करसी अब केलि।। २२ ।।**

पत्ते-पत्ते को देखकर, बेलि बेलों को देखकर हंसती हैं। पशु-पक्षी के चित्र आपस में इशारे करते हैं, लगता है अभी दौड़कर खेलने लगेंगे।

**फूल फूल कई पांखड़ी, तिन हर पांखड़ी कई नंग।**
**नंग देख नंग हंसत, फूल फूल के संग।। २३ ।।**

कई तरह के फूल हैं। फूल में कई तरह की पांखुड़ी हैं। पांखुड़ी में कई तरह के नग हैं। नग को नग देखकर, फूल को फूल देखकर हंसते हैं।

**अपनी अपनी जात ले, ठाढ़े हैं सकल।**
**करने खुसाल धनीय को, करत हैं अति बल।। २४ ।।**

अपनी अपनी जातियों में सब सुन्दर शोभा बनी है जो अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार धनी को खुश करते हैं।

**त्यों त्यों जोत बढ़त है, ज्यों ज्यों देखें नूरजमाल।**
**नाचत हरखत हंसत, देख धनी को खुसाल।। २५ ।।**

जैसे-जैसे वह धनी को देखते हैं उनका तेज बढ़ता जाता है। वह नाचकर, प्रसन्न होकर, हंसकर धनी को खुश करते हैं।

**करें खुसाल धनीय को, होंएं आप खुसाली हाल।**
**ए सोभा इन मुख क्यों कहूं, ए देखे सब मछराल।। २६ ।।**

वह धनी को खुश करके स्वयं खुश होते हैं। उनकी इस मस्ती की शोभा को किस मुख से कैसे कहें?

Nijanand App

**कई पसु पंखी जवेरन के, कई रंग बिरंग कई विध।**
**जानों के खेल पर सब खड़े, ए क्यों कही जाए सनंध।। २७ ।।**

पशु-पक्षी जवाहरातों के बने हैं। उनमें कई रंग शोभा देते हैं लगता है यह सब खेल करने के लिए तैयार खड़े हैं।

**होत कछू पड़ताल पांउं से, बोलें सब स्वर अपनी बान।**
**पसु पंखी देखे बोलते, सब आप अपनी तान।। २८ ।।**

जब पांव की थोड़ी आहट मिलती है तो वह सब अपनी जबान से बोलने लगते हैं। यह सब पशु-पक्षी अपनी-अपनी तान में बोलते दिखाई देते हैं।

**कछू थोड़े ही पड़ताल से, धाम सब्द धमकार।**
**बोलें पसु पंखी बानी नई नई, जुबां जुदी जुदी अनेक अपार।। २९ ।।**

पांव की थोड़ी ही आहट से आवाज गूंजती है जिससे पशु-पक्षी अपनी बोली में तरह-तरह की आवाज से बोलते हैं।

**जिमी चेतन बन चेतन, पसु पंखी सुध बुध।**
**थिर चर सबे चेतन, याकी सोभा है कई विध।। ३० ।।**

यहां की जमीन, वन, पशु-पक्षी, स्थावर, जंगम सब चेतन हैं। उन्हें हर तरह की सुध और बुद्धि है।

**तो कह्या थावर चेतन, अपनी अपनी मिसल।**
**ए अन्तर आंखें खुले पाइए, परआतम सुख नेहेचल।। ३१ ।।**

परमधाम में स्थावर (अचर) को चेतन कहा है। यह आत्मा की आंखें खुलें तो अपनी परआतम से इनके अखण्ड सुखों की लीला का ज्ञान हो।

**एक थंभ कई चित्रामन, हर चित्रामन कई नकस।**
**नकस नकस कई पांखड़ी, जो देखों सोई सरस।। ३२ ।।**

थंभ में कई चित्रकारी, चित्रकारी में कई नक्शकारी है। नक्श की पांखुड़ी जो भी दिखाई देती है वह श्रेष्ठ लगती है।

**तिन हर पांखड़ी कई कांगरी, हर कांगरी कई नंग।**
**एक नंग को बरनन न होवहीं, तो सारे थंभ को क्यों कहूं रंग।। ३३ ।।**

हर पांखुड़ी में कई तरह की कांगरी बनी है। कांगरी में कई नग हैं। जिसके एक नग का वर्णन नहीं हो पाता तो पूरे थंभों के रंगों का वर्णन कैसे करूं?

**मोर मैना मुरग बांदर, कई जुदी जुदी सब जुबान।**
**नेक सब्द उठे भोम का, बोलें आप अपनी बान।। ३४ ।।**

मोर, मैना, मुर्गा, बन्दर सब अपनी-अपनी जबान से भूमि पर जरा सी चलने की आहट सुनकर अपनी-अपनी बोली में बोलने लगते हैं।

Nijanand App

**एक सब्द के उठते, उठें सब्द अनेक।**
**पसु पंखी जो चित्रामन के, कई विध बोलें विवेक।। ३५ ।।**

एक के बोलने से चारों तरफ से बोलने की आवाज आने लगती है। इस तरह के बने पशु-पक्षी कई तरह की बोली बोलते हैं।

**कई जुदे जुदे रंगों पुतली, कई बने चित्रामन।**
**कई विध खेल जो खेलहीं, मुख मीठी बान रोसन।। ३६ ।।**

कई अलग-अलग पुतलियों के चित्र बने हैं जो सुन्दर मीठी बोली बोलते हुए तथा कई तरह के खेल खेलते हुए दिखाई देते हैं।

**सो भी खेल बोल स्वर उठत, रंग रस होत रमन।**
**सोभा सुन्दरता इनकी, केहे न सकों मुख इन।। ३७ ।।**

इस खेल में बोलियों के स्वरों से बड़ा आनन्द होता है। उनकी सुन्दरता यहां के मुख से नहीं कही जाती।

**चित्रामन सारे चेतन, सब लिए खड़े गुमान।**
**जोत लरत है जोत सों, कोई सके न काहू भान।। ३८ ।।**

सभी चित्र चेतन हैं और स्वाभिमान से खड़े दिखाई देते हैं जिनके तेज की किरणें आपस में टकराती हैं और एक-दूसरे को खण्डित नहीं कर पातीं।

**करे जोत लड़ाई जोत सों, तेज तेज के संग।**
**किरन किरन सों लड़त हैं, आठों जाम अभंग।। ३९ ।।**

जोत से जोत, तेज से तेज टकराते हैं और किरणों से किरणें रात-दिन टकराती हैं।

**नूर नूर जहूर जहूर सों, करत सफ जंग दोए।**
**एक दूजे के सनमुख, ठेल न सके कोए।। ४० ।।**

नूर से नूर, शोभा से शोभा, सब आपस में एक-दूसरे से महाजंग करते हैं और सामने से कोई भी एक-दूसरे को पीछे नहीं धकेल सकता।

**जंग करत अंगों अंगें, साथ नंग के नंग।**
**रंग सों रंग लरत हैं, तरंग संग तरंग।। ४१ ।।**

अंग से अंग, नग से नग, रंग से रंग, तरंग से तरंग टकराती हैं।

**एक रंग को नंग कहावहीं, तामें कई रंग उठत।**
**ताको एक रंग कह्यो न जावहीं, आगे कहा कहूं विध इत।। ४२ ।।**

एक रंग का नग कहलाता है। उसमें कई रंगों की किरणें उठती हैं। उसके एक रंग की शोभा नहीं कही जाती तो आगे की शोभा कहां तक कहूं?

**जित देखूं तित सूरमें, एक दूजे थें अधिक देखाए।**
**कई ऊपर तले कई बीच में, याको जुध न समाए।। ४३ ।।**

जहां देखती हूं वहां सब योद्धा ही योद्धा एक-दूसरे से अधिक बलशाली दिखाई देते हैं। कई ऊपर, कई नीचे, कई बीच में जो चित्र बने हैं, इनके युद्धों की शोभा देखने योग्य होती है।

Nijanand App

**तेज जोत उद्दोत आकास लों, किरना न काहूं अटकाए।**
**देख देख जंग निरने कियो, कोई पीछा न पांउं फिराए।। ४४ ।।**

इनके तेज की किरणें आकाश तक जाती हैं। कहीं अटकती नहीं हैं। इनके युद्ध को देखकर यही निर्णय किया कि इनमें से कोई भी पीछे नहीं हटेगी।

**चलते हलते धाम में, सबे होत चलवन।**
**कई कोट जुबां इत क्या कहे, कई बिध थंभ दिवालन।। ४५ ।।**

परमधाम में चलने-फिरने से यह सब हिलते हैं, इसलिए यहां के थंभ और दीवारों की शोभा करोड़ों जबान से भी नहीं कही जा सकती।

**एक सरूप के नख की, सोभा बरनी न जाए।**
**देख देख के देखिए, तो नेत्र क्यों ए न तृपिताए।। ४६ ।।**

एक स्वरूप के नख की शोभा का वर्णन नहीं होता। लगता है बस देखते रहिए फिर भी नैनों की प्यास बुझती नहीं।

**तो सारे सरूप की क्यों कहूं, और क्यों कहूं इनों के खेलि।**
**बन बेली पसु पंखी, माहें करें रंग रस केलि।। ४७ ।।**

पूरे स्वरूप की शोभा तथा इनके खेल कैसे कहें? वन की बेलियां, पशु-पक्षी सब आपस में आनन्द करते हैं।

**जात न कही एक सरूप की, अति सोभा सुन्दर मुख।**
**तेज जोत रंग क्यों कहूं, ए तो साख्यातों के सुख।। ४८ ।।**

इनके एक स्वरूप की जाति का वर्णन नहीं हो सकता। इनके तेज, जोत और रंग साक्षात् जैसा सुख देते हैं।

**सोभा जाए ना कही बिरिख पात की, तो क्यों कहूं फल फूल बास।**
**क्यों होए बरनन सारे बिरिख को, ए तो सुख साथ को उलास।। ४९ ।।**

एक वृक्ष के पत्ते की शोभा नहीं कही जाती तो फल-फूलों की सुगन्धि का कैसे बयान करूं? फिर सारे वृक्ष का कैसे बयान हो? यह तो सुन्दरसाथ खुद ही उमंग से अनुभव कर सकते हैं।

**जो एता भी कह्या न जावहीं, तो क्यों कहूं थंभ चित्राम।**
**परआतम हमारियां, ए तिनके सुख आराम।। ५० ।।**

जब इतना भी कहने में नहीं आता तो थंभ के चित्रों की शोभा कैसे कहूं? यह हमारी परआतम ही जानती है जिनके यह अखण्ड सुख हैं।

**एक थंभ की एह विध कही, ऐसे कई थंभ दिवालें द्वार।**
**फेर देखों एक भोम को, तो अतंत बड़ो विस्तार।। ५१ ।।**

यह एक थंभ की हकीकत बताई है। यहां ऐसे कई थंभ और दीवारें और दरवाजे हैं तो फिर एक भोम को देखो तो बहुत बड़ा विस्तार है।

Nijanand App

**पार नहीं थंभन को, नहीं दिवालों पार।**
**ना कछू पार सीढ़ियन को, ना पार कमाड़ी द्वार।।५२ ।।**

थंभों, दीवारों, सीढ़ियों, किवाड़ों और दरवाजों का पार नहीं है।

**नवों भोमका तुम साथ जी, कर देखो आतम विचार।**
**क्यों आवे जुबां इन अकलें, ए जो अपारे अपार।।५३ ।।**

हे सुन्दरसाथजी! नौ भोमों को तुम अपनी आत्मा में विचार करके देखो। यह सभी बेशुमार हैं। यहां की जबान और अक्ल से इनका बयान करना सम्भव नहीं है।

**चित्रामन एक थंभ की, क्यों कहूं केते रंग।**
**बन बेली फूल पात की, जुदी जुदी जिनसों नंग।।५४ ।।**

एक थंभ के चित्र में कितने वन, बेलि, फूल, पत्ते हैं तथा उनमें कितने रंगों के नग हैं, कैसे कहूं?

**पसु पंखी हाथ पांउं नैन के, कई विध केस परन।**
**कई खेल पुतलियन के, कई वस्तर कई भूखन।।५५ ।।**

पशु-पक्षियों के हाथ, पांव, आंखें, कई तरह के बाल, पंख, पुतलियों के कई तरह के खेल तथा वस्त्र और आभूषण कई तरह के हैं।

**कई बिध सोभा भोम की, कई रंग नंग नकस अनेक।**
**कई ठौर अलेखे जड़ित में, जो देखो सोई नेक से नेक।।५६ ।।**

एक भोम में कई तरह की शोभा, रंग, नग की नक्शकारी दिखाई देती है। जिसे देखो वही अच्छी लगती है।

**ए कही न जाए एक जिनस, सो जिनस अखंड अलेखे।**
**सत सरूप सुख लेत हैं, देख देख के देखें।।५७ ।।**

यह शोभा एक ही जिनस की बयान नहीं हो सकती तो यहां बेशुमार अखण्ड जिनसें हैं। परमधाम के सच्चे स्वरूप इन्हें देख-देखकर अपार सुख लेते हैं।

**अति सोभा सुन्दर ऊपर की, कई नकस बेल फूल।**
**कई जिनसें कहा कहूं, होत परआतम सनकूल।।५८ ।।**

ऊपर के बेलि, फूल की नक्शकारी में कितनी जिनसें और कितनी अधिक शोभा है यह परआतम समझती है।

**कई जिनस जुगत थंभन में, कई जिनस जुगत दिवाल।**
**कई जिनसें द्वार क्यों कहूं, ए जो जिनस जुगत पड़साल।।५९ ।।**

कई तरह के जिनस थंभों में हैं। कई तरह की दीवारों में कई तरह के दरवाजों में और कई तरह की पड़साल में शोभा देते हैं।

**कई जिनसें जुगत सीढ़ियां, कई जुगतें जिनसें मंदिर।**
**कई जिनस झरोखे जालियां, कई जिनस जुगत अंदर।।६० ।।**

कई तरह की युक्ति की सीढ़ियां है। कई युक्ति के मन्दिर, झरोखे, जालियां और भी अन्दर कई तरह की शोभा है।

Nijanand App

**सामग्री कई सनंधें, कई जिनसें सेज्या सिंघासन।**
**कई सनंधें चौकी संदूकें, कई बिध भरे भूखन।। ६१ ।।**

कई तरह की सेज, कई तरह के सिंहासन, कई तरह की चौकी, आभूषणों से भरी हुई सन्दूकें और कई तरह की दूसरी हकीकत शोभा देती है।

**कई जिनसें वस्तर भरे, कई विध विध के विवेक।**
**वस्तर भूखन किन विध कहूं, कई विध जुगत अनेक। ६२ ।।**

इन सन्दूकों में कई तरह के वस्त्र, कई तरह के आभूषण अलग-अलग नमूने के भरे हैं।

**कई विध प्याले सीसे सीकियां, कई डब्बे तबके दिवाल।**
**सोभित सुन्दर मंदिरन में, कई लटकत रंग रसाल।। ६३ ।।**

कई तरह के प्याले, शीशे (दर्पण, आइना), छीके (सिकहर), डिब्बे, तबके (तश्तरियां), दीवारें मन्दिर में शोभित हैं और आनन्द में लटक रहे हैं।

**कई जुगतें हिंडोलों मंदिरों, कई जंजीरां झलकत।**
**माहें डब्बे पुतलियां झनझनें, कई विध झूलत बाजत।। ६४ ।।**

कई तरह के मन्दिर में हिंडोले हैं जिनकी जंजीर झलकती हैं। मन्दिरों के अन्दर डिब्बे, पुतलियां झुनझुना जब झूला झूलते हैं, तो बजते हैं।

**कई मिलावे साथ के, सुन्दर झरोखे झांकत।**
**सोभा देखत बन की, मोहोल इन समें सोभित।। ६५ ।।**

सुन्दरसाथ मिलकर झरोखे से वन की शोभा देखते हैं। इनमें महल की शोभा बढ़ जाती है।

**दौड़त खेलत सखियां, एक साम सामी आवत।**
**हांसी रमूज एक दूजी सों, अरस-परस ल्यावत।। ६६ ।।**

सखियां आमने-सामने दौड़ती खेलती हैं तथा आपस में हंसी-मजाक करती हैं।

**नवों भोम के मन्दिरों, माहें सखियां खेल करत।**
**चारों जाम हांस विलास में, रंग रस दिन भरत।। ६७ ।।**

नौ भोम के मन्दिरों में सखियां खेलती हैं। पूरा दिन हंसी-विलास में बीतता है।

**झरोखे नवों भोम के, मिल मिल बैठत जाए।**
**निस दिन हेत प्रीत चित्त सों, मन वांछित सुख पाए।। ६८ ।।**

नवीं भोम के झरोखों में सब मिलकर बैठती हैं और रात-दिन प्रेम, प्रीति में मग्न होकर मन चाहे सुख लेती हैं।

**विध विध के सुख बन में, सैयां खेलें झरोखों माहें।**
**वाउ ठंढा प्रेमल गरमीय में, सुख लेवें सीतल छांहें।। ६९ ।।**

सखियां झरोखों से तरह-तरह के खेल वनों में खेलती हैं। गर्मी की ऋतु में शीतल (ठंडी) सुगन्धित हवा और छाया का आनन्द लेती हैं।

Nijanand App

**सुख बरसाती और बिध, बीज चमके घटा चौफेर।**
**सेहेरां गरजत बूंदें बरसत, घटा टोप लिया बन घेर।।७० ।।**

बरसात में बिजली की चमक, चारों तरफ घटाओं की शोभा, बादलों का गर्जना, बूंदों का बरसना, काली घटाओं से घिरा वन सुन्दर शोभा देता है।

**ज्यों ज्यों अम्बर गाजत, मोर कोयल करें टहुंकार।**
**भमरा तिमरा गान गूंजत, स्वर मीठे पंखी मलार।।७१ ।।**

जैसे-जैसे बादल गरजते हैं मोर और कोयल आवाज करते हैं। भंवरे, झींगुर (तिमरा) की आवाजें गूंजती हैं और वर्षा ऋतु में पक्षियों की आवाज के मीठे स्वर सुनाई देते हैं।

**सीत कालें सुख धूप को, पहेले पोहोंचत झरोखों आए।**
**इत आराम घड़ी दोए तीन का, प्रभात समें सुखदाए।।७२ ।।**

शीतकाल में धूप सबसे पहले झरोखे से आकर सुख देती है। यहां दो तीन घड़ी प्रातःकाल बड़ी सुखदायी होती हैं।

**दौड़ें कूदें सखियां ठेकत, कई अंग अटपटी चाल।**
**मटके चटके पांउं लटके, अंग मरोरत मुख मछराल।।७३ ।।**

सखियां दौड़ती हैं, कूदती हैं, उचकती हैं और अटपटी चाल से अंग को मोड़ती हैं। मटक-चटक कर लटक दिखाती हुई मस्ती में अंग मोड़ती हैं।

**जुदे जुदे जुत्थों प्रेम रस, अलबेलियां अति अंग।**
**हंसत आवत धनी के चरनों, रस भरियां अंग उमंग।।७४ ।।**

सखियां टोली की टोली, अंग में उमंग भरे हुए, हंसती हुई धनी के चरणों में आती हैं और बड़ी खुश होकर आनन्द लेती हैं।

**कई हाथों फिरावत छड़ियां, कई हाथों फिरावत फूल।**
**कई आवत गेंद उछालती, कई आवत हैं इन सूल।।७५ ।।**

कई हाथ में छड़ी घुमाती आती हैं। कई फूल घुमाती आती हैं। कई गेंद उछालती आती हैं। इस तरह से बड़ा सुख लेती हैं।

**सब आए आए चरनों लगें, एक एक आगूं दूजी के।**
**ए बड़ा सुखकारी समया, सोभा लेत इत ए।।७६ ।।**

सभी आ-आकर एक दूसरे से आगे निकल श्री राजजी के चरणों लगती हैं। यह समय बड़ा सुखदायक होता है। यहां की शोभा बढ़ जाती है।

**बात बड़ी देख देखिए, प्रेम प्रघल भर पूर।**
**प्रेम अंग कह्यो न जावहीं, सूरों में सूर सूर।।७७ ।।**

यहां बड़ी बात यह दिखाई देती है कि सखियों में प्रेम लबालब भरा है। उनके अंगों में प्रेम भरा है। उसकी महिमा नहीं कही जाती। वह मस्ती में एक-दूसरे से अधिक बलवंती हैं।

Nijanand App

**रंग नंग नकस न जाए कहे, तो क्यों कहे जाएं थंभ दिवालें द्वार।**
**तो समूह की जुबां क्या कहे, जाको वार न पार सुमार।।७८ ।।**

रंग तथा नग की नक्शकारी नहीं कही जाती तो थंभ, दीवारों, दरवाजों की और सबकी शोभा जो बेशुमार है, यहां की जबान कैसे बयान करें?

**रंग नंग नकस अन-गिनती, कह्यो न जाए सुमार।**
**ज्यों बट बीज माहें खड़ा, कर देखो आतम विचार।।७९ ।।**

रंग, नग, नक्श अनगिनत हैं। जैसे बट का विशाल पेड़ एक छोटे से बीज में से होता है, उसी तरह से हे सुन्दरसाथजी! इस शोभा को जो मैंने बताई है बीज के समान विचारकर देखो।

**कई दिवालें कई चौक थम्भ, कई मन्दिर कमाड़ी द्वार।**
**एक भोम को बरनन ना केहे सकों, एतो नवों भोम विस्तार।।८० ।।**

कई दीवारें, चौक, थंभे, मन्दिर, किवाड़, दरवाजे एक भोम के वर्णन नहीं कर सकती हूं और इनका तो विस्तार नौ भोमों में है। कैसे कहा जाएगा?

**दसमी भोमें चांदनी, ऊपर कांगरी जोत।**
**तेज पुन्ज इन नूर को, जानों आकास सब उद्दोत।।८१ ।।**

दसवीं भोम में चांदनी है। ऊपर कांगरी बनी है। जिसका तेज आकाश में नहीं समाता, ऐसा लगता है।

**हेम जवेर रंग रेसम, केहे केहे कहूं मुख जेता।**
**नूर तेज जोत झलकत, अकल आवे जुबां में एता।।८२ ।।**

सोना, जवाहरात, रंग, रेशम जो कुछ भी मुख से कहा है वह मेरी अक्ल, जबान में जितने आए उनके तेज की झलकार का वर्णन किया है।

**महामत कहे सुनो साथजी, बुध जुबां करे बरनन।**
**ले सको सो लीजियो, ए नेक कह्या तुम कारन।।८३ ।।**

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! यह मैंने अपनी बुद्धि और जबान से वर्णन किया है। यह सब तुम्हारे वास्ते ही किया है, इसलिए ले सको, तो इसे ले लेना।

।। प्रकरण ।। ३८ ।। चौपाई ।। २२६२ ।।

## प्रेम को अंग बरनन

**प्रेम देखाऊं तुमको साथजी, जित अपना मूल वतन।**
**प्रेम धनी को अंग है, कहूं पाइए ना या बिन।। १ ।।**

श्री महामतिजी कहते हैं, सुन्दरसाथजी! प्रेम अपने मूल वतन परमधाम में ही है। वह मैं तुम्हें दिखाती हूं। प्रेम श्री राजजी महाराज का अंग है जो परमधाम के बिना और कहीं नहीं है।

**प्रेम नाम दुनियां मिने, ब्रह्मसृष्टि ल्याई इत।**
**ए प्रेम इनों जाहेर किया, न तो प्रेम दुनी में कित।। २ ।।**

प्रेम का नाम तो ब्रह्मसृष्टियों ने ही दुनियां में आकर बताया अन्यथा दुनियां में प्रेम कहीं था ही नहीं।

Nijanand App